कुछ रोचक, कुछ प्रेरक प्रसंग

आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय - त्याग और तपस्या की मूर्ति

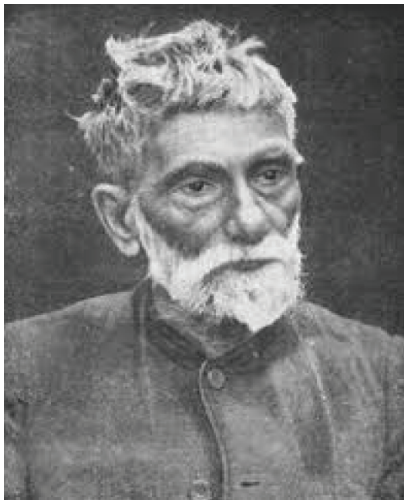

आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय (2 अगस्त 1861-16 जून 1944) को भारत में आधुनिक रसायन का जनक कहा जाता है। वे ऋषि परंपरा के प्रत्यक्ष उदाहरण थे। वे एक बहुत सादगीपसंद तथा देशभक्त वैज्ञानिक थे। ''सादा जीवन उच्च विचार'' उनके जीवन का मंत्र था। आचार्य राय को गांव-देहात का जीवन अच्छा लगता था। ग्रामीण ों से उन्हें खास तौर पर हमदर्दी थी। वे अकसर ग्रामीणों से मिलकर उनका सुख-दुःख, हालचाल पूछा करते थे। वे अपनी मां के भंडारे से अच्छी-अच्छी खाद्य-सामग्री ले जाकर गांव वालों में बांटते रहते थे। सन् 1922 के बंगाल के अकाल के दौरान आचार्य राय की भूमिका अविस्मरणीय है। 'मैनचेस्टर गार्डियन' अखबार के एक संवाददाता ने लिखा था; "इन विकट परिस्थितियों में रसायन विज्ञान के एक प्रोफेसर पी.सी. राय सामने आए और उन्होंने सरकार की चूक को सुधारने के लिए देशवासियों का आह्वान किया। उनके इस आह्वान पर बंगाल की जनता ने एक महीने में ही तीन लाख रुपए की मदद की। धनाढय परिवार की महिलाओं ने अकालपीड़ितों की मदद के लिए रेशम के वस्त्र तथा अपने गहने तक दान कर दिए।

आचार्य राय ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय भागीदारी निभाई। कलकत्ता में गांधी जी की पहली सभा कराने का श्रेय आचार्य राय को ही जाता है। वे एक सच्चे देशभक्त थे। उनका कहना थाः "विज्ञान इंतजार कर सकता है, स्वराज नहीं"। वह स्वतंत्रता आंदोलन में एक सक्रिय भागीदार थे। उन्होंने असहयोग आंदोलन के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों में मुक्तहस्त आर्थिक सहायता दी। उन्होंने अपने भाषण में एक बार कहा था – "मैं रसायनशाला का प्राणी हूं। मगर ऐसे भी मौके आते हैं जब वक्त का तकाजा होता है कि टेस्ट-ट्यूब छोड़कर वतन की आवाज सुनी जाए"। लेकिन अफसोस! आचार्य राय देश को स्वतंत्र होते अपनी आंखों से नहीं देख सके। सन् 1944 में उनका निधन हो गया।

यूनिवर्सिटी कॉलेज आफ साइंस, लंदन के प्रोफेसर एफ.जी. डोनान की डॉ. आचार्य राय पर की गई मार्मिक टिप्पणी बहुत मायने रखती है। उनके अनुसारः "सर पी.सी राय जीवन भर केवल एक संकीर्ण दायरे में बंधे प्रयोगशाला विशेषज्ञ बन कर नहीं रहे। अपने देश की तरक्की तथा आत्मनिर्भरता हमेशा उनके आदर्श रहे। उन्होंने अपने लिए कुछ नहीं चाहा, तथा सादगी एवं मितव्ययिता का कठोर जीवन जीया। राष्ट्र एवं समाज-सेवा उनके लिए सर्वोपरि रहे। वे भारतीय विज्ञान के प्रणेता थे।' वास्तव में आचार्य राय ने सन्यस्त तथा व्रती का जीवन जीया। उन्होंने परिवार नहीं बसाया, तथा आजीवन अविवाहित रहे। सांसारिक बंधनों, मोहमाया तथा परिग्रह से खुद को कोसों दूर रखा। अपने देहावसान से पूर्व आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय ने अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति सामाजिक कार्यों के लिए दान कर दी थी। ऐसा था ऋषितुल्य एवं प्रेरणादायी उनका व्यक्तित्व।

डॉ. बीरबल साहनी - सादगी तथा निष्ठा की प्रतिमूर्ति

डॉ. बीरबल साहनी (14 नवम्बर 1891-10 अप्रैल 1949) एक सुप्रसिद्ध शिक्षक और वैज्ञानिक थे। वे बहुत देशभक्त थे, बड़ी सादगी से रहते थे। वे प्रायः सफेद खद्दर की अचकन, चूड़ीदार पायजामा तथा गांधी टोपी धारण करते थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा लाहौर के सेंट्रल मॉडल स्कूल में हुई। उन्होंने बी.एस-सी. की पढ़ाई कैंब्रिज के इमेनुअल कॉलेज से की। बताया जाता है कि, बी.एस-सी. की परीक्षा के प्रश्न-पत्रों में से एक परचे में गलती से उससे पहले साल के सारे प्रश्न दुबारा पूछ लिए गए थे। बीरबल ने यह बात

एक कक्ष-निरीक्षक को बतलाई। जब निरीक्षक ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया तो वे उसी क्षण बिना परीक्षा दिए परीक्षा कक्ष से बाहर निकल आए। बाद में विश्वविद्यालय की सीनेट ने उनकी बात को सही पाया तथा उस परचे का इम्तहान फिर से लिया गया। उन्हें खुद पर इतना भरोसा था।

पर्यावरण के प्रति सजग, विज्ञान के उपासक – डॉ. होमी जहांगीर भाभा

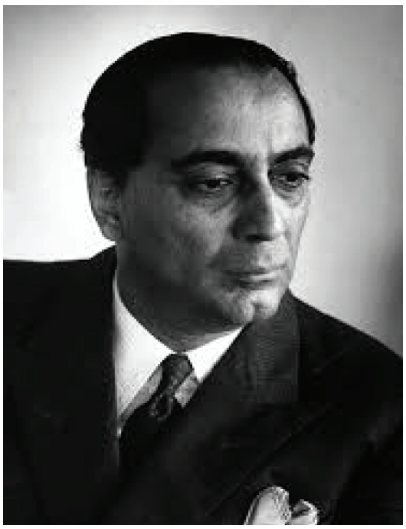

डॉ. होमी जहांगीर भाभा (30 अक्तूबर 1909-24 जनवरी 1966) को भारत के परमाणु कार्यक्रम का शिल्पकार कहा जाता है। एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक होने के साथ-साथ वे एक कुशल इंजीनियर भी थे। उन्हें नृत्य, संगीत, चित्रकारी तथा वास्तुकला से बेहद लगाव था। उन्हें पेड़-पौधों से प्यार था। एक बार डॉ. भाभा मुंबई के पेडर रोड स्थित अपने आवास के पास से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ मजदूर एक हरे-भरे पेड़ को काट रहे हैं। डॉ. भाभा ने मजदूरों से पूछा – 'तुम इसे काट क्यों रहे हो? तुम्हें पता है कि पेड़ हमारी कितनी सेवा करते हैं।' इस पर एक मजदूर बोला, 'साहब, हमें तो कहा गया है कि सड़क चौड़ी करने के लिए इस पेड़ को काटना जरूरी है। इसलिए हम इसे काट रहे हैं।' उस मजदूर की बात सुनकर डॉ. भाभा बोले – तुम बस एक घंटा इंतजार करो। इसके बाद उन्होंने एक अधिकारी को बुलाकर पूछा कि क्या किसी खड़े वृक्ष को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर लगाया जा सकता है। इस पर अधिकारी बोलाः 'सर, कोशिश करने पर सफलता मिल सकती है।' यह सुनकर डॉ. भाभा ने उस अधिकारी को तुरंत पेडर रोड भेजकर उस वृक्ष को सावधानीपूर्वक जड़ सहित निकालकर क्रेन की सहायता से अन्यत्र लगवाया। इस घटना से डॉ. भाभा की पेड़-पौधों तथा अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को समझा जा सकता है।

अद्भुत लगनशीलता के धनी – डॉ. हरगोबिंद खुराना

डॉ. हरगोबिंद खुराना (9 जनवरी 1922-9 नवम्बर 2011) भारतीय मूल के प्रख्यात अमेरिकी जैवरसायनज्ञ थे जिन्हें वर्ष 1968 का शरीरक्रियाविज्ञान/आयुर्विज्ञान का नोबेल पुरस्कार मिला था। यह सम्मान उन्हें मार्शल नीरेनबर्ग तथा रॉबर्ट होले के साथ 'आनुवंशिक कूट की व्याख्या और प्रोटीन संश्लेषण में इनकी भूमिका' पर किए गए उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य के लिए प्रदान किया गया था। एक कहावत है, पूत के दांत पालने में। डॉ. हरगोबिंद खुराना पर यह कहावत बिलकुल सही बैठती है। हरगोबिंद को परिवार के लोग प्यार से गोबिंद नाम से ही पुकारते थे। पढ़ाई-लिखाई में वे बचपन से ही बहुत तेज थे तथा खेल-कूद में भी भाग लेते थे। गणित में तो उनकी गहरी रुचि थी। उनकी मां जब चौके पर रोटी बनातीं तो वे होड़ लगाते और कहते – ''चलो देखते हैं मां, तुम्हारी रोटी तवे से पहले उतरती है या मेरा गणित का सवाल पहले हल हो जाता है।'' मैट्रिक की परीक्षा का परिणाम निकला तो हरगोबिंद का क्या हाल हुआ था, इसके बारे में उनके एक अध्यापक दीनानाथ जी ने एक घटना का जिक्र किया है। मैट्रिक का नतीजा आया तो हरगोबिंद को रोते हुए देखा गया। इसका कारण यह नहीं था कि वह फेल हो गए थे। वह तो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे। रोने की वजह यह थी कि समूची योग्यता-सूची में उनका नाम दूसरे नंबर पर आया था। उन्हें इसी बात का मलाल था जिससे वे दुःखी थे।

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र, असोशिएट प्रोफेसर, होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र, टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, पी.एन. पूरव मार्ग, मानखुर्द, मुंबई-400088
ई-मेलः vigyan.lekhak@gmail.com